PRANAV SHEKHAR

ASSISTANT PROFESSOR

DEPARTMENT OF ECONOMICS

NOTES FOR PG SECOND SEMESTER

AND BA PART I

दिए गए चित्र में बाजार की संतुलन अवस्था को दर्शाया गया है। माँग वक्र को D तथा पूर्ति वक्र को S द्वारा दर्शाया गया है। पूर्ति वक्र (supply curve. S, demand curve D) को E बिन्दु पर काटता है। इसलिए बाजार का संतुलन E बिन्दु पर स्थापित होता है जहाँ संतुलन कीमत OP और संतुलन मात्रा OQ है। यदि बाजार में अस्थिरता के कारण संतुलन E बिन्दु से हटता है वस्तु की कीमत तथा वस्तु की मात्रा में कमी या वृद्धि हो सकती है। यदि वस्तु की कीमत में कमी हो जाती है

और वस्तु की कीमत P से हटकर P_2 पर आ जाती है ऐसी स्थिति में वस्तु की मात्रा की माँग बढ़ जाती है और ऐसे वस्तु की माँग वस्तु की पूर्ति से अधिक D>S (excess demand) होगी। चूँकि वस्तु की माँग बढ़ जाएगी और उसकी पूर्ति कम रहेगी तो अंततः वस्तु की कीमत में उछाल आएगी और वह वापस P बिन्दु पर आ जाएगी और बाजार में पुनः संतुलन स्थापित हो जाएगा। यदि कुछ कारणों से वस्तु की कीमत P से बढ़कर P_1 तक पहुँच जाती है तो वस्तु की माँग की मात्रा भी Q से घटकर Q_1 हो जाती है। ऐसी स्थिति में वस्तु की पूर्ति वस्तु की माँग से अधिक (excess supply) होगी। (S>D)। excess supply के कारण वस्तु की कीमत घटेगी और वह पुनः P बिन्दु पर संतुलन की अवस्था में होगी।

निष्कर्ष :—

परम्परागत अर्थशास्त्र में माँग और पूर्ति को बाजार शक्तियाँ (market forces) कहा गया है जो automatic adjustment करती है कि बाजार को संतुलन बिन्दु पर स्थापित रखें।

⟶ Type of Equilibrium (संतुलन के प्रकार)

i) सामान्य संतुलन (General Equilibrium)

ii) आंशिक संतुलन (Partial Equilibrium)

सामान्य संतुलन सिद्धांत के प्रवर्तक (Econ-

... that it is
... power forces."[1] In
...ge. It is a state where there
...pants so that no one has a tendency
...ilibrium denotes in economics absence of

...all
...sky
...rms
...his
...pers
...ber
...her
...nes
...by
...rate
...at a
...h is
...ght
...um
...e or
...and

Fig. 1